DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor
(Guest faculty)
Deptt. of Samskrit
SRAP college, Bara
Chakia, BRABU-
Muz. pur

B.A. (Hons.) part — II

Subject — Samskrit

Paper — IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का अन्वय सहित हिन्दी-अनुवाद

17

श्लोक:

शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।
दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः॥
(अभिज्ञान० 1/17)

अन्वय:

इदं शुद्धान्तदुर्लभं वपुः आश्रमवासिनो जनस्य यदि (अस्ति तदा) खलु उद्यानलता वनलताभिः दूरीकृताः (सन्ति)।

अनुवाद

यदि राजमहल में भी कठिनता से मिल सकनेवाला ऐसा सुन्दर स्वरूप इस तपोवासिनी बालिकाओं को हो सकता है तो यह कहना पड़ेगा कि जंगल की लताओं ने सौन्दर्य-सौकुमार्य आदि अपने गुणों से उद्यान की परिष्कृत लताओं को भी मात कर दिया है।

— 0 —